Today's Poem – 07.06.2014

अब इस छी-छी गंदी दुनिया को आग लगनी है

शरीर सहित किसी से भी दिल नहीं लगानी है

अब हमें शान्तिधाम सुखधाम है जाना-

किसी के नाम रूप में नहीं फंसना

एक बाप को ही याद करना

कलयुगी बंधन तोड़ देना

विशाल बुद्धि बन निडर बनना है

कोई भी पाप अब नहीं करना है

पेट के लिए झूठ नहीं बोलना

अपने ऊपर रहम करना

शुभचिंतन करना

शुभचिंतक बनना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!